e-ISSN:2582 - 7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 4, Issue 7, July 2021

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 5.928

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 7, July 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0407028|

LAMBI KAVITAON KE SANDARBH ME NIRALA KI SHILP PRAVIDHI
(लम्बी कविताओं के संदर्भ में निराला की शिल्प प्रविधि)

DR. SEEMA TIWARI
Assistant Teacher (Hindi)
Government Higher Scecondary School
Puraila, Pratapgarh [UP]

लम्बी कविता : उद्भव और विकास - द्विवेदी युग में यह विधा नाम मात्र की थी। इसका वास्तविक रूप छायावाद युग में परिलक्षित होता है। प्रसाद और निराला लम्बी कविता की दृष्टि से विशेष रूप से उल्लेखनीय है। राम की शक्ति पूजा, तुलसीदास, सरोज स्मृति, परिवर्तन, प्रलय की छाया, कुकुरमुत्ता आदि रचनाएँ लम्बी कविता की श्रेणी में आते हैं।

प्रयोगवाद के प्रवर्तक अज्ञेय की रचना 'असाध्यवीणा' और 'चक्रान्तशीला' इस युग की प्रतिनिधि रचनाएं हैं। नरेश मेहता की 'समय देवता' नयी कविता की पहली लम्बी कविता है। नरेश मेहता की रचना 'संशय की एक रात' नाटक शैली में लिखी गयी लम्बी कविता है।

धर्मवीर भारती ने अपनी लम्बी कविता 'प्रमथ्युगाथा' में परम्परा बोध के विरूद्ध आधुनिक कविता को उजागर किया है। मुक्तिबोध की रचना 'अंधेरे में', 'ब्रह्मराक्षस', 'भविष्य धारा' ऐसी लम्बी कविता है जिसमें शुरू से अन्त तक फैन्टेसी का निर्वाह हुआ है। केदारनाथ सिंह की लम्बी कविता 'बाघ' और शमशेर बहादुर सिंह की लम्बी कविता 'अमन का राग', राजकमल चौधरी की रचना 'मुक्ति प्रसंग' सौमित्र मोहन की लम्बी कविता 'लुकमान अली' इसी श्रेणी की रचना है। धूमिल की रचना 'पटकथा' और लीलाधर जगूड़ी की रचना 'नाटक जारी है' तथा विपिन कुमार अग्रवाल की रचना 'नंगे पैर' भी लम्बी कविता मानी गयी है। ये हिन्दी साहित्य की कुछ महत्वपूर्ण लम्बी कविताएँ हैं इसके अतिरिक्त भी बहुत सी लम्बी कविताएँ हैं।

लम्बी कविताओं की रचना पद्धति का प्रश्न अन्ततः उनकी अन्विति के स्वरूप से जुड़ा हुआ है। लम्बी कविता ऊपर से विश्रृंखल और अराजक लग सकती है पर भीतर से संगठित हो सकती है। लम्बी कविता में यह अन्विति सीधी और तार्किक नहीं होती। डॉ0 रामदरश मिश्र ने लम्बी कविता को महाकाव्यात्मक रचना की संज्ञा दी है– ''लम्बी कविता वह है, जो आज के जीवन के कई–कई घुमावदार मोड़ों से गुजरती हुई जटिल यथार्थ का बोध और अनुभूति को उभारती है।''

शिल्प : अर्थ और परिभाषा - शिल्प शब्द अंग्रेजी के 'टेकनीक' शब्द का हिन्दी अनुवाद है। शिल्प रचनात्मक प्रक्रिया का एक विशिष्ट रूप है। शिल्प का अर्थ किसी भी रचना की रीति, विधान और ढंग या तरीका है। शिल्प का साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। शिल्प के बिना किसी भी रचना प्रक्रिया का तारतम्य नहीं बन सकता। शिल्प के बिना भावों की अभिव्यक्ति ही नहीं हो सकती। बिम्ब, प्रतीक, अलंकार, छंद, भाषा एवं विशेषण विपर्यय इत्यादि शिल्प–विधान के ही अंग है।

शिल्प को अनेक प्रकार से परिभाषित किया गया है। वृहद हिन्दी कोश के अनुसार– ''शिल्प से अभिप्राय हाथ से कोई वस्तु तैयार करने अथवा दस्तकारी या कारीगरी से है।'' डॉ0 मोहन अवस्थी ने काव्य–शिल्प की सैद्धान्तिक व्याख्या प्रस्तुत करते हुए कहा– ''काव्य विधान काव्य का विधान है। कविता करने की विधि से लेकर कविता सम्बन्धी गुण–दोषों का विधिवत् ज्ञान उसके भीतर आ जाता है और उस ज्ञान का

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 7, July 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0407028|

आत्मप्रकाश काव्य शिल्प है।'' काव्य शिल्प किसी भी कवि की कविता के दोष को मुक्त करने के साथ ही आकर्षक भी बनाता है।

निराला की लम्बी कविताओं में शिल्प प्रविधि: परम्परागत समीक्षा शास्त्र में शिल्प विधान को कलापक्ष के अन्तर्गत समाहित किया गया है। निराला की लम्बी कविताओं में जो आधारभूत तत्व परिलक्षित होते हैं उसमें भाषा, छन्द विधान, अलंकार योजना, प्रतीक और बिम्ब योजना, फन्तासी प्रमुख रूप से हैं।

भाषा : निराला की भाषा भावों के अनुरूप है। उन्होंने जिस प्रकार का जैसा भी वर्णन किया है भाषा भी वैसे ही परिवर्तित हो जाती है। निराला ने भाषा की स्वच्छंदता, स्वाभाविकता और भावानुगमिता पर विशेष बल दिया है।

निराला जी ने भाषा के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है– ''भाषा बहुभावात्मिकता रचना की इच्छा मात्र से बदलने वाली देह है, इसलिए रचना और भाषा के अगणित स्वरूप भिन्न–भिन्न साहित्यिकों की विशेषता जाहिर करते हुए दीख पड़ते हैं। रचना युद्ध कौशल है और भाषा तदनुरूप अस्त्र। इस अस्त्र का पारंगत वीर साहित्यिक ही यथा समय समुचित प्रयोग कर सकता है।'' निराला जी की भाषा में दो रूप दिखाई देते हैं, एक सरल शब्दावली से युक्त भाषा और दूसरी संस्कृतनिष्ठ तत्सम प्रधान तथा दीर्घ समासमयी भाषा है। निराला जी ने खड़ी बोली को अपनी भाषा का आधार बनाया। इनकी गद्यात्मक और पद्यात्मक कृतियों में भाषा के जितने रूप मिलते हैं उतने किसी अन्य रचनाकार में सम्भव नहीं है। इनकी रचनाओं में अंग्रेजी, फारसी, बंगला और संस्कृत भाषा के अतिरिक्त ग्रामीण शब्दों के ठेठ गंवारू शब्द भी मिलते हैं। 'कुकुरमुत्ता' कविता में इसके उदाहरण देखने को मिल जाते हैं–

''अबे, सुन बे, गुलाब
भूल मत पाई जो खुशबू, रंगों आब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतराता है केपीटलिस्ट
× × × × ×
रोज पड़ता रहा पानी
तू हराम खानदानी।''

निराला जी की कविता 'सरोज स्मृति' में भाषा के विविध मिश्रण दिखाई देते हैं। निराला जी की भाषा कहीं भावुकता से युक्त है तो कहीं भाषा उग्रता को परिलक्षित करती है जो इनकी मनःस्थिति को भी दिखाती है। उग्रता के संदर्भ में उदाहरण–

''ये कान्यकुब्ज–कुल–कुलांगर
खाकर पत्तल में करें छेद
× × × × ×
वे जो जमुना के से कछार
पद फटे बिवाई के उधार
खाये के मुख ज्यों, पिये तेल
चमरौधे जूते से सकेल
निकले, जी लेते, घोर गन्ध।।''

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 7, July 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0407028|

छंद विधान : निराला मुक्त छंद के जन्मदाता कहे जाते हैं। निराला ने भाषा के साथ ही छंद की चुनौती को बड़े संयम और धैर्यपूर्वक स्वीकार किया। छायावादी कवियों में निराला ने छन्द सम्बन्धी विशेष कार्य किया। मुक्त छंद के प्रयोग ने निराला को सफलता के उच्चतम शिखर पर पहुँचाया।

'परिमल' की भूमिका में निराला जी ने लिखा है– ''मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्यों की मुक्ति कर्मो के बन्धन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छन्दों के शासन से अलग हो जाना है।'' अपनी मुक्त प्रवृत्ति के कारण छंदों के प्रयोग में बंधी बंधाई लीक पर चलना स्वीकार नहीं किया। निराला जी ने छन्दों के अनेक प्रयोग किये। अपनी कृतियों में भावों के अनुकूल ही छंदों का प्रयोग किया। गीतों में काव्य और संगीत का समन्वय करके एक नई परम्परा का सूत्रपात किया, तो प्रगीतों से उन्होंने रसानुकूल छंदों को ग्रहण किया। आख्यानक काव्यों में भी जिन छंदों को प्रयुक्त किया वे सब भले छन्दशास्त्र के अनुकूल हो नयेपन के साथ आये।

निराला जी ने तीन प्रकार की कविताओं को अपनी रचना में स्थान दिया–

1. ***सममात्रिक सान्त्यानुप्रास कविताएं :*** सममात्रिक सान्त्यानुप्रास की कविताओं में मात्राओं और तुकों की समानता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। 'यमुना के प्रति' नामक कविता में इस छंद का प्रयोग दिखाई देता है–

''बता कहाँ अब वह वंशीवट
कहां गये नट नागर श्याम
चल चरणों का व्याकुल पनघट
कहां आज वह वृन्दाधाम?''

उपर्युक्त कविता पंक्तियों में मात्रिक अर्द्ध समछंद है। इस छंद के प्रथम और तृतीय चरण में 15–15 मात्राएं होती है।

2. ***विषम मात्रिक सान्त्यानुप्रास कविताएं:*** विषम मात्रिक सान्त्यानुप्रास कविताओं में प्रत्येक चरण की मात्राएं विषम होने पर भी तुकबद्धता रहती है। 'राम की शक्ति पूजा' में रोला छंद का प्रयोग हुआ है। 24 मात्राओं के इस छंद में निराला ने अन्त में एक सा क्रम न रखकर अपने ढंग से विधान किया है। कवियों ने इसे 'शक्ति पूजा छंद' नाम दिया है।

''लौटे युग दल, राक्षस पद–दल पृथ्वी छलमाल
विधि महोल्लास से बार–बार आकाश विकल
x x x x
चल रही शिविर की ओर स्थविरदल ज्यों विभिन्न।''

इसी प्रकार 'तुलसीदास' कृति में चौपाई छंद को आधार बनाकर एक नये छंद का निर्माण किया है। इस छंद के प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम में 16–16 मात्राएं तथा तीसरे और छठें चरण में 22–22 मात्रायें होती हैं।

''यह श्री पावन गृहणी उदार
गिरिवर उरोज सरि पयोधार
करवन तरू, फैला फल निखारती देती।''

उपर्युक्त उदाहरणों को देखने के बाद हम कह सकते हैं कि इस तरह के छन्दों का निर्वाह निराला ही सफलतापूर्वक कर सकते हैं।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 7, July 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0407028|

3. ***मुक्त छंद में लिखित कविताएं :*** मुक्त छंद की कविताएं साहित्य जगत में निराला की ही देन है। निराला के मुक्त छंद का उदाहरण 'जूही की कली' में स्पष्ट दिखाई देता है–

''विजन वन वल्लरी पर
सोती थी, सुहाग–भरी–स्नेह–स्वप्न–मग्न
अमल–कोमल तनु तरूणी जुही की कली,
दृग वन्द किये, शिथिल पत्रांक में।''

बच्चन सिंह ने मुक्त छंद के बारे में लिखा है– ''प्रवाह तथा गति की दृष्टि से साधारण छन्दों की अपेक्षा मुक्त छन्द अधिक स्वाभाविक होता है। छंदों की बंदिश की रक्षा के लिए प्रवाह और गति की अवहेलना करनी पड़ती है। कभी–कभी व्याकरण के प्रतिकूल प्रयोग करना पड़ता है। तुक मिलाने के लिए शब्दों के रूप बिगाड़ने पड़ते हैं। मुक्त छन्द में इस तरह का कोई बंधन नहीं होता।''

निराला जी की लम्बी कविताओं में जागो फिर एक बार, कुकुरमुत्ता, महाराज शिवाजी के पत्र, पंचवटी प्रसंग की रचना मुक्त छंद में ही हुई है।

प्रतीक और बिम्ब विधान: प्रतीक और बिम्ब के बिना आधुनिक कविता की शिल्प प्रविधि पूर्ण नहीं हो सकती है। हिन्दी कविता में प्रतीक और बिम्ब का महत्वपूर्ण स्थान है।

प्रतीक विधान : प्रतीक कवि के विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने का साधन है। नंद दुलारे बाजपेयी ने प्रतीक के संबंध में कहा है– ''निराला के काव्य में प्रतीक सहज और अनायास रूप में आये हैं, और आते ही गये हैं उनके किसी विशेष प्रतीक या प्रतीकार्य के प्रति निष्ठा नहीं, प्रतीक काव्य के अनुचर हैं, नियन्ता नहीं।'' 'राम की शक्ति पूजा' में प्रतीक योजना स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है। 'कुकुरमुत्ता' में कुकुरमुत्ता और गुलाब दोनों प्रतीक हैं। गुलाब उच्च वर्ग और कुकुरमुत्ता सर्वहारा वर्ग का। ''जागो फिर एक बार'' में सिंह, स्थान, मृत्युजंय गीता आदि शब्द प्रतीक के रूप में ही प्रयुक्त हुए हैं। यमुना के प्रति, सरोज स्मृति, महाराज शिवाजी का पत्र आदि कविताओं में प्रतीकों का बहुतायत प्रयोग हुआ है।

बिम्ब विधान: निराला जी ने अपनी कविताओं में बिम्ब विधान को विशेष महत्व दिया है। छायावादी कवियों ने अपने काव्य में प्रकृति को विशेष महत्व दिया। इसलिए प्रकृति सम्बन्धी बिम्ब अधिक देखने को मिलते हैं। बिम्ब के सम्बन्ध में डॉ0 नगेन्द्र ने कहा है– ''सर्जना के क्षणों में अनुभूति के नाना रूप कवि की कल्पना पर आरूढ़ होकर जब शब्द अर्थ के माध्यम से व्यक्त होने का उपक्रम करते हैं तो इस सक्रियता के फलस्वरूप अनेक मानस छवियाँ आकार धारण करने लगती है। आलोचना की शब्दावली में इन्हें ही काव्य बिम्ब कहते हैं।'' छायावादी कवियों ने बिम्ब के लिए चित्र शब्द का प्रयोग किया है।

निराला के काव्य में यह चित्रमयता पूर्णता का स्पर्श करती जान पड़ती है। निराला के काव्य चित्र अपने सौन्दर्य और प्रभाव में अचूक और असाधरण है। निराला ने उत्कृष्ट चित्र विधान के लिए भाव, चित्र और शब्द चयन तीनों की अनुकूल अन्विति को आवश्यक माना है। इनका कहना है– ''जहाँ चित्र और भाव का समन्वय अनुकूल शब्दों के माध्यम से व्यक्त होता है वहाँ उत्कृष्ट कविता बनती है।'' निराला ने 'राम की शक्ति पूजा' में अनेक बिम्बों की रचना की है–

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 7, July 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0407028|

''है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान स्तब्ध है पवन चार
अप्रतिहतगरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भूधर ज्यों ध्यान मग्न, केवल जलती मशाल।।''

इसी प्रकार 'यमुना के प्रति' नामक कविता में रति का बड़ा स्पष्ट और संश्लिष्ट बिम्ब प्रस्तुत किया है। 'पंचवटी प्रसंग' में सुपर्णखा के रूप वर्णन में बिम्ब को प्रस्तुत किया गया है। निराला की 'तुलसीदास' कविता में बहुत से स्थानों पर बिम्बों की सुन्दर छटा दिखायी देती है। बिम्ब रचना के लिए ज्ञान अनुभूति और स्मृति की अपेक्षा होती है। अनुभूति की सटीकता, प्रौढ़ता और सशक्तता बिम्ब रचना की प्राण होती है। निराला के काव्य में ये सभी विशेषताएँ विद्यमान है।

अलंकार विधान : अलंकार का सामान्य अर्थ है 'आभूषण'। अलंकार शब्द की व्युत्पत्ति के संदर्भ में आचार्यों ने अनेक परिभाषाएं दी है। ''अलंकरोति इति अलंकारः'' अर्थात अलंकृत ही अलंकार है।

दण्डी के अनुसार– काव्य शोभाकरान् धर्मान् अलंकारात् प्रचक्षते। अर्थात् काव्य के शोभा विधायक गुणों को अलंकार कहते हैं।

रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार– ''भावों का उत्कर्ष दिखानें और वस्तुओं के रूप, गुण और क्रिया का अधिक तीव्र अनुभव कराने में कभी भी सहायक होने वाली उक्ति ही अलंकार है।'' पंत जी ने भी पल्लव की भूमिका में अलंकार के विषय में कहा है कि– ''अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिए नहीं, वे भाव की अभिव्यक्ति के विशेष द्वार हैं, भाषा की पुष्टि के लिए, राग की परिपूर्णता के लिए आवश्यक उपादान है, पृथक स्थितियों के पृथक स्वरूप भिन्न अवस्थाओं के भिन्न चित्र हैं। निराला जी ने अपने काव्य अलंकारों को महत्वपूर्ण स्थान दिया। उन्होंने शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों प्रकार के अलंकारों का प्रयोग किया। निराला जी के काव्य में अनुप्रास, श्लेष, उपमा, रूपक, संदेह, रूपकातिश्योक्ति, मानवीकरण, ध्वन्यार्थ व्यंजना, विशेषण, विपर्यय आदि प्रमुख अलंकारों को स्थान दिया।

निराला की लम्बी कविताओं में अन्योक्ति अलंकार, मानवीकरण अलंकार तथा विशेषण विपर्यय अलंकार का विशेष प्रयोग हुआ है। निराला ने मानवीकरण अलंकार का अच्छा उदाहरण 'यमुना के प्रति' कविता में दिया है–

''यमुने तेरी इन लहरों में
किन अधरों की आकुल तान
पथिक प्रिया सी जाग रही है
उस अतीत के नीरव गान।''

'कुकुरमुत्ता' कविता में अन्योक्ति अलंकार का स्पष्ट उदाहरण देखने को मिल जाता है। निराला जी ने अलंकार के साथ–साथ नवीन उपमानों का भी प्रयोग किया है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि निराला की लम्बी कविताएँ सारगर्भित, कालजयी तथा उद्देश्यपरक एवं अत्यंत महत्वपूर्ण है। निराला ने अपनी लम्बी कविताओं में शिल्प प्रविधि में नये–नये प्रयोग किये। निराला द्वारा काव्य में मुक्त छंद का प्रयोग साहित्य में महत्वपूर्ण उपलब्धि है। निराला जी ने परम्परा और रूढ़ि से हटकर काव्य जगत में नवीन प्रयोग किया जो इनकी शिल्प प्रविधि में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 5.928|

| Volume 4, Issue 7, July 2021 |

|DOI:10.15680/IJMRSET.2021.0407028|

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. लम्बी कविताओं का रचना विधान, डॉ0 नरेन्द्र मोहन, पृष्ठ 2
2. मतांतर प्रवेशांक, सं0 आनन्द प्रकाश, पृष्ठ 26
3. वृहद हिन्दी कोश (ज्ञानमंडल लिमिटेड, बनारस), पृष्ठ 1334
4. डॉ0 मोहन अवस्थी, आधुनिक हिन्दी काव्य शिल्प, पृष्ठ 6
5. निराला, प्रबन्ध प्रतिमा, पृष्ठ 76
6. परिमल की भूमिका, निराला, पृष्ठ 8
7. अपरा, निराला, पृष्ठ 92
8. अपरा, निराला, पृष्ठ 43
9. तुलसीदास, निराला, पृष्ठ 31
10. परिमल निराल रचनावली (भाग–1), नन्द किशोर नवल, पृष्ठ 41
11. क्रान्तिकारी कवि निराला, बच्चन सिंह, पृष्ठ 27
12. काव्य बिम्ब, डॉ0 नगेन्द्र, पृष्ठ 61
13. प्रबंध प्रतिमा, निराला, पृष्ठ 282–283
14. अपरा, निराला, पृष्ठ 44
15.

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 5.928

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

9710 583 466 9710 583 466 ijmrset@gmail.com

www.ijmrset.com